वर्ष 27 एकादश अंक

जून 2015

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

9 सफलता हेतु आवश्यक स्वच्छ अन्त:करण

विशेष स्तम्भ

11 समसामयिक सामान्य ज्ञान

17 आर्थिक परिदृश्य

23 राष्ट्रीय परिदृश्य

25 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

32 खेलकूद परिदृश्य

35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

36 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं

38 विज्ञान समाचार

लेख

40 समसामयिक लेख—दक्षिण चीन सागर : वर्चस्व की लड़ाई का केन्द्र बिन्दु

42 पर्यावरण लेख—प्रदूषण और पर्यावरण

43 तकनीकी लेख—जी.पी.एस. : एक परिचय

45 सारभूत तत्व कोष

हल प्रश्न-पत्र

आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक क्लर्क सम्मिलित लिखित परीक्षा, 2014

48 तर्कशक्ति परीक्षा

52 English Language

56 परिमाणात्मक अभिरुचि

60 सामान्य सचेतता

63 कम्प्यूटर ज्ञान

66 एस.एस.सी. संयुक्त स्नातकस्तरीय (प्रथम चरण) परीक्षा, 2014

84 रेलवे भर्ती सेल (पटना) ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2014

90 उत्तर प्रदेश पुलिस सब-इंस्पेक्टर (मुख्य) परीक्षा, 2011

101 एस.एस.सी. स्टेनोग्राफर ग्रेड 'सी' एवं 'डी' (द्वितीय पाली) परीक्षा, 2014

114 आगामी स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया में प्रोबेशनरी ऑफीसर्स प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

विविध/सामान्य

125 वार्षिक रिपोर्ट 2013-14– सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन क्षेत्र में जागरूकता, शिक्षा और प्रगति के बढ़ते चरण : एक दृष्टि में

128 ज्ञान वृद्धि कीजिए

129 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सफलता हेतु आवश्यक स्वच्छ अन्तःकरण

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

चाहे विद्यार्थी जीवन हो अथवा व्यवसाय– हर क्षेत्र में सफलता के लिए 'प्रतिभाशाली व्यक्तित्व' आवश्यक होता है. प्रतिभाशाली होने के लिए आवश्यक है–'स्वच्छ अन्तःकरण' ! स्वच्छ अन्तःकरण से तात्पर्य है मन का सरल, पवित्र व शांत होना. पवित्र मन उसे कहते हैं जिसमें दूषित विचारों के प्रति कोई भी आकर्षण व लगाव न हो.

शुद्ध अन्तःकरण, पवित्र विचारों से युक्त सामान्य प्रतिभा वाले व्यक्ति भी असाधारण उपलब्धियाँ हासिल करने में सफल हो जाते हैं. ऐसे व्यक्तियों की सोच सकारात्मक होती है तथा लक्ष्य को भेदना ही उनका ध्येय होता है.

अक्सर प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी विद्यार्थी भी परीक्षाओं में उतने प्रभावी सिद्ध नहीं हो पाते, जितना उन्हें होना चाहिए. इसके पीछे कई कारण व मुद्दे हो सकते हैं, परन्तु एक महत्वपूर्ण कारण होता है उनके विचारों की अपवित्रता, अश्लील व्यवहार, जिद्दी व आक्रामक स्वभाव.

विद्यार्थी जीवन हमारे सम्पूर्ण जीवन का प्रारम्भिक काल है, प्राथमिक चरण है, यह वह समय है जब हम अपने मस्तिष्क में उत्तम विचारों के बीज बोएं ताकि भविष्य में जो फसल आए, वह सड़ी-गली व निरर्थक न हो. यदि बीज बोने के साथ ही किसान खेतों में से झाड़-झंखाड़ दूर न करे अपने क्षेत्र की सफाई न करे तो वे बीज कभी भी सही परिणति को प्राप्त नहीं कर पाएंगे.

वर्तमान समय में इस दृष्टिकोण से हर विषय में ध्यान केन्द्रित करना अति आवश्यक है अन्यथा प्रतिभाएं गुमराह हो जाएंगी. आत्मविश्वास गलत रास्तों पर गतिशील होते हुए एक के बाद एक दोषों की शृंखला को जन्म देगा. बालक का भविष्य न बिगड़े इस हेतु चिंतित व सजग माता-पिता को स्वयं अपना अंतःकरण भी शुद्ध रखना अनिवार्य है. हम यहाँ आवश्यक नहीं अनिवार्य शब्द का प्रयोग इसलिए कर रहे हैं ताकि हमारे भीतर वाकई यह सजगता बढ़े कि जब तक अभिभावक स्वयं पवित्र विचारों व शालीन आचार के धनी नहीं बनेंगे तब तक वे अपनी संतान को योग्य व उत्तम जीवन से विभूषित नहीं देख पाएंगे. जब बच्चे उत्तम आचार-विचार में पलते हैं तो उनके भीतर भी सद्गुणों के चुनाव की क्षमता जागृत होती है. विद्यार्थियों को इंद्रिय सुखों के आकर्षण से बचाए रखना तभी सम्भव है, जब वे अपनी योग्यता व प्रतिभा को अपने कैरियर के लिए ही समर्पित करें अन्यथा के बीच राह में ही सारी शक्तियाँ नष्ट कर डालेंगे.

●●●